जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – फरवरी 2026 ।। अंक – 67 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

हुनर से निधि ने भरी आत्मनिर्भरता की उड़ान (पृष्ठ – 02)

उद्यमिता और संघर्ष से मुनिया मुर्मू ने पाई सफलता (पृष्ठ – 03)

जीविका के कौशल प्रशिक्षण से अर्पिता ने छूआ आसमान (पृष्ठ – 04)

कौशल का गुर सीख, बिहार के युवा बन रहे आत्मनिर्भर

दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना बिहार के ग्रामीण युवाओं के लिए आशा, अवसर और आत्मनिर्भरता का सशक्त माध्यम बनकर सामने आई है। इस योजना के अंतर्गत स्वयं सहायता समूह से जुड़ी 18 से 35 वर्ष की आयु वर्ग के सदस्यों को या उनकी बच्चो को उनकी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुरूप रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़ने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है। कौशल विकास, मार्गदर्शन और रोजगारपरक प्रशिक्षण के माध्यम से बिहार के हजारों युवा आज अपने सपनों को साकार करते हुए आर्थिक रूप से स्वावलंबी बन रहे हैं।

बिहार में दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के माध्यम से अब तक 84,558 युवाओं को प्रशिक्षित किया गया है, जिनमें से 46,169 युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त हुआ है। इसके साथ ही ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से 3,51,689 युवाओं को स्वरोजगार हेतु हुनरमंद बनाया गया है। इनमें से 2,60,927 युवक–युवतियाँ सफलतापूर्वक रोजगार या स्वरोजगार से जुड़ चुके हैं। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि सही दिशा, प्रशिक्षण और सहयोग मिलने पर ग्रामीण युवा भी आत्मनिर्भरता की मजबूत नींव रख सकते हैं।

जीविका परियोजना के माध्यम से विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में युवाओं के कौशल संवर्धन, उन्हें स्वरोजगार से जोड़ने और रोजगार कराने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं के बच्चों को इन प्रयासों से व्यापक लाभ मिल रहा है। यह सर्वविदित है कि जब परिवार का एक सदस्य आय अर्जन करने लगता है, तो पूरे परिवार के जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव आने लगता है।

दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना अन्तर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं –

कम्युनिटी मोबिलाइजेशन ड्राइव

कम्युनिटी मोबिलाइजेशन ड्राइव के माध्यम से जीविका स्वयं सहायता समूह, ग्राम संगठन और संकुल स्तरीय संघ की बैठकों में रोजगार, स्वरोजगार एवं नि:शुल्क कौशल प्रशिक्षण से जुड़ी जानकारियाँ साझा की जाती है। जीविका दीदियों को प्रेरित किया जाता है कि वह अपने बच्चों को दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना अन्तर्गत संचालित विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों के माध्यम से विभिन्न ट्रेड में उपलब्ध नि:शुल्क आवासीय प्रशिक्षण का लाभ दिलाएँ।

यूथ मोबिलाइजेशन ड्राइव

यूथ मोबिलाइजेशन ड्राइव के जरिए 18 से 35 वर्ष के युवाओं को सीधे तौर पर कौशल विकास, विभिन्न प्रक्षेत्रों में प्रशिक्षण और रोजगार के अवसरों की जानकारी दी जाती है। इस पहल का उद्देश्य युवाओं की जिज्ञासा और उत्सुकता को सही दिशा देने के साथ–साथ रोजगारपरक प्रशिक्षण प्रदान कर रोजगार से जोड़ना है।

रोजगार –सह – मार्गदर्शन मेला

जीविका के माध्यम से प्रखंड स्तर पर रोजगार सह मार्गदर्शन मेलों का आयोजन किया जाता है, जहाँ युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं। इन मेलों में विभिन्न कंपनियां भाग लेती हैं और योग्य युवाओं को मौके पर ही नियुक्ति पत्र प्रदान करती हैं। साथ ही स्वरोजगार, रोजगारपरक प्रशिक्षण, दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना और ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थानों से संबंधित विस्तृत जानकारी युवायों को प्रदान की जाती है।

प्रशिक्षण एवं रोजगार के अवसर

दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के अंतर्गत चयनित परियोजना क्रियान्वयन एजेंसियों के माध्यम से युवक–युवतियों को सिलाई, नर्सिंग, होटल मैनेजमेंट, इलेक्ट्रिशियन, सेल्स, कंप्यूटर, सॉफ्ट स्किल, जनरल ड्यूटी असिस्टेंट सहित कई ट्रेड में नि:शुल्क आवासीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इन प्रशिक्षण केंद्रों में रहने, खाने और प्रशिक्षण की पूरी व्यवस्था होती है। महिला, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति वर्ग के युवाओं को विशेष प्राथमिकता दी जाती है। प्रशिक्षण पूर्ण होने के बाद युवाओं को सीधे नौकरी के अवसर भी उपलब्ध कराए जाते हैं।

पोस्ट प्लेसमेंट सपोर्ट

प्रशिक्षण उपरांत जब युवा नौकरी के लिए कार्यस्थल पर जाते हैं, तो शुरुआती अवधि में उन्हें आर्थिक सहयोग भी परियोजना द्वारा प्रदान किया जाता है। अपने जिले में ही नौकरी मिलने पर 2 हजार रुपये, जिले के बाहर 3 हजार रुपये तथा राज्य से बाहर रोजगार मिलने पर 6 हजार रुपये की सहायता राशि प्रदान की जाती है, ताकि वह वेतन प्रारंभ होने से पूर्व आर्थिक रूप से समर्थ रह सकें।

छात्र – अभिभावक मिलन समारोह

प्रखंड और जिला स्तर पर छात्र – अभिभावक मिलन समारोह का आयोजन कर पूर्ववर्ती प्रशिक्षुओं, रोजगार प्राप्त युवाओं एवं उनके अभिभावकों को अपने अनुभव साझा करने का अवसर दिया जाता है। इससे अन्य युवक–युवतियाँ और उनके अभिभावक प्रेरित होते हैं और कौशल विकास एवं रोजगार–स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।

दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना और ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से बिहार में कौशल विकास, रोजगार और स्वरोजगार की एक मजबूत व्यवस्था विकसित हो रही है, जो ग्रामीण युवाओं को आत्मनिर्भर बनाकर राज्य के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

कौशल विकास और रोजगार से रूबी की स्थितिम में हुआ सुधार

भागलपुर जिले के गोपालपुर प्रखंड अंतर्गत हरनाचक गोसाईं ग्राम पंचायत की रहने वाली रूबी कुमारी ने दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना का लाभ लेकर अपने जीवन की दिशा बदल दी है। सीमित संसाधनों और कठिन पारिवारिक परिस्थितियों में पली–बढ़ी रूबी के लिए आत्मनिर्भर बनना किसी सपने से कम नहीं था। परिवार की आर्थिक स्थिति लंबे समय तक बेहद कमजोर रही, जिससे घर की आवश्यकताएँ पूरी करना भी चुनौतीपूर्ण हो गया था।

20 अक्टूबर 2016 को रूबी कुमारी ने ऊषा जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़कर अपने जीवन में बदलाव की शुरुआत की। समूह से जुड़ने के बाद वह नियमित बैठकों में भाग लेने लगीं और धीरे–धीरे उन्हें जीविका द्वारा संचालित कौशल विकास और रोजगार कार्यक्रमों की जानकारी मिली। अपने घर के हालात सुधारने की दृढ़ इच्छा के साथ रूबी ने इन कार्यक्रमों से जुड़ने का निर्णय लिया।

इसी क्रम में गोपालपुर प्रखंड में आयोजित रोजगार मेले में रूबी ने भाग लिया और सिलाई मशीन ऑपरेटर के पद के लिए अपना पंजीकरण कराया। चयन के उपरांत उन्हें बांका स्थित प्रशिक्षण संस्थान में तीन माह का व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण ने न केवल उनके तकनीकी कौशल को निखारा, बल्कि उनमें आत्मविश्वास और कार्य संस्कृति की समझ भी विकसित की।

प्रशिक्षण पूर्ण करने के बाद रूबी को तमिलनाडु के त्रिपुर स्थित एक निजी परिधान निर्माण कंपनी में सिलाई मशीन ऑपरेटर सहायक के रूप में रोजगार मिला। गाँव से निकलकर दूसरे राज्य में जाकर काम करना उनके लिए एक बड़ा निर्णय था, लेकिन रूबी ने साहस दिखाया और परिवार के सहयोग से इस अवसर को स्वीकार किया। 22 अक्टूबर 2024 को उन्होंने त्रिपुर जाकर अपने नए कार्य की शुरुआत की।

वर्तमान में रूबी को प्रतिमाह 13,600 रुपये का मानदेय मिल रहा है, साथ ही रहने की सुविधा भी कंपनी द्वारा उपलब्ध कराई गई है। इस रोजगार से रूबी न केवल आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनी हैं, बल्कि अपने परिवार की स्थिति सुधारने में भी वह महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। रूबी कुमारी की यह कहानी उन ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा है, जो कौशल विकास और मेहनत के बल पर अपने भविष्य को बेहतर बनाना चाहती हैं।

हुनर से निधि ने भरी आत्मनिर्भरता की उड़ान

सपनों को साकार करने की जिद और सही मार्गदर्शन मिल जाए, तो मंज़िल अवश्य मिलती है। लखीसराय जिले के सूर्यगढ़ा प्रखंड अंतर्गत अभयपुर कसबा गाँव की निधि की सफलता की कहानी इसका सशक्त उदाहरण है। जीविका के सहयोग से निधि ने अपने सपनों को साकार किया और आज वह बेंगलुरु जैसे महानगर में कार्य कर रही हैं।

निधि अक्टूबर 2025 से बेंगलुरु स्थित टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी में मोबाइल असेंबल ऑपरेटर के रूप में कार्यरत हैं। उन्हें यह अवसर जीविका द्वारा आयोजित रोजगार सह मार्गदर्शन मेला के माध्यम से प्राप्त हुआ। इस मेले की जानकारी निधि की माँ रिंकी देवी ने दी थी, जो वर्ष 2017 से शिव जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं। यह समूह माँ गायत्री जीविका महिला ग्राम संगठन तथा ज्ञान गंगा जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ से जुड़ा हुआ है।

रिंकी देवी स्वयं ग्रामीण महिलाओं को स्वयं सहायता समूह से जोड़कर स्वरोजगार के लिए प्रेरित करती रही हैं और गाँव के बेरोजगार युवक–युवतियों को भी रोजगार सह मार्गदर्शन मेला एवं यूथ मोबिलाइजेशन ड्राइव के माध्यम से रोजगार और प्रशिक्षण से जोड़ने का कार्य कर रही हैं। जून 2025 में आयोजित रोजगार सह मार्गदर्शन मेला की जानकारी उन्होंने अपनी बेटी निधि को दी, जिसके बाद इंटर पास निधि ने मोबाइल असेंबल ऑपरेटर पद के लिए आवेदन किया और चयनित हो गईं।

चयन के बाद निधि ने टाटा इलेक्ट्रॉनिक्स में नौकरी की शुरुआत की। उन्हें प्रति माह 14 हजार रुपये वेतन के साथ नि:शुल्क आवास एवं भोजन की सुविधा भी कंपनी द्वारा उपलब्ध कराई जा रही है। गाँव से बाहर निकलकर बड़े शहर में काम करने और नई तकनीक सीखने से निधि का आत्मविश्वास बढ़ा है।

निधि के पिता श्री दिनेश कुमार एनटीपीसी में कार्यरत हैं, लेकिन सीमित आय के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य थी। अब निधि अपनी कमाई से परिवार को सहयोग भी कर रही हैं। वह पत्राचार के माध्यम से स्नातक की पढ़ाई भी कर रही हैं। आज निधि अपने गाँव की छात्र–छात्राओं के लिए रोल मॉडल हैं और महिला स्वावलंबन व सशक्तीकरण की मिसाल बन चुकी हैं।

पंखा निर्माण से किरण देवी के सपनों को मिला पंख

किरण देवी, सीतामढ़ी जिले के फुलपरासी, मटियारकला, प्रखंड बथनाहा की रहने वाली हैं। वह महारानी जीविका स्वयं सहायता समूह और दुर्गा जीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्य हैं। उनके पति भागनारायण महतो दिल्ली में मजदूरी करते थे। मजदूरी की आय एवं खेती–बाड़ी से परिवार का पालन–पोषण करना कठिन था। किरण देवी अपने तीन बच्चों (एक लड़की और दो लड़के) की शिक्षा और परिवार का भरण–पोषण सही ढंग से नहीं कर पा रही थीं।

वर्ष 2017 में किरण देवी जीविका से जुड़ी और अपने बच्चों के सहयोग से पंखा असेम्बलिंग का कार्य शुरू करने का निर्णय लिया। उनके दोनों बेटों ने दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना अन्तर्गत पंखा असेम्बलिंग का प्रशिक्षण लिया और परिवार के सहयोग से अपने घर में व्यवसाय प्रारंभ किया। शुरू में दीदी ने वर्ष 2019 में अपने समूह से 12,000 रुपये का ऋण लेकर तथा अपनी बचत से पंखा असेम्बलिंग का कार्य शुरू की। इसके बाद, वर्ष 2020 में समूह से 40,000 रुपये, वर्ष 2023 में 60,000 रुपये और वर्ष 2025 में 1,00,000 रुपये का ऋण लेकर उन्होंने इस व्यवसाय का विस्तार किया।

आज किरण देवी और उनके परिवार द्वारा निर्मित पंखे और कटर मशीन बिक्रेताओं को बेचे जाते हैं। साथ ही, उन्होंने सोनबरसा से भुतही बाजार में अपना खुद का दुकान भी खोला है, जहाँ इन उत्पादों की अच्छी बिक्री होती है। वर्तमान में दीदी महीने में लगभग 1,00,000–1,10,000 रूपये की आय अर्जित कर रही हैं, जिससे परिवार का भरण–पोषण और बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित हुई है।

किरण देवी का उद्देश्य अपने पुराने ऋण चुकाकर समूह से 5,00,000 रूपये का ऋण लेकर एक फैन वाइंडिंग मशीन खरीदना है, जिसकी कीमत 7–8 लाख रुपये है। यह कदम उत्पादन क्षमता को बढ़ाएगा जिससे उनकी आमदनी और बढ़ेगी। किरण देवी की कहानी यह साबित करती है कि मेहनत, साहस और सही योजना से जीवन में बड़े बदलाव संभव हैं।

उद्यमिता और संघर्ष से मुनिया मुर्मू ने पाई सफलता

मुनिया मुर्मू, इनारावरण गाँव, पंचायत कटियारी, प्रखंड कटोरिया, जिला बांका की रहने वाली हैं। वह वनवासी जीविका स्वयं सहायता समूह, राधा जीविका महिला ग्राम संगठन और नया सवेरा जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ की सदस्य हैं। मुनिया दीदी का जीवन गरीबी और कठिनाइयों से भरा हुआ था। उनका परिवार जंगल से लकड़ी काटकर बेचता था, जिससे घर का खर्च मुश्किल से पूरा होता था। इन परिस्थितियों के बावजूद उनकी मेहनत और साहस ने उन्हें आगे बढ़ने का अवसर दिया।

वर्ष 2004 में प्रदान संस्था ने उनके गाँव में स्वयं सहायता समूह का गठन का कार्य शुरू किया, जिसमें मुनिया दीदी शामिल हुईं। उनकी मेहनत और लगन को देखकर उन्हें जीविका मित्र के रूप में चुना गया। यह उनके जीवन में पहला सकारात्मक बदलाव था, जिसने उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनने की दिशा दी। वर्ष 2016 में उनका समूह जीविका के अन्तर्गत शामिल किया गया, जिससे व्यवसाय के नए अवसर उपलब्ध हुए। वर्ष 2021 में मुनिया दीदी ने स्वयं सहायता समूह से 20,000 रुपये का ऋण लेकर नर्सरी व्यवसाय शुरू किया। धीरे–धीरे उन्होंने स्वयं सहायता समूह से अतिरिक्त ऋण लेकर अपने व्यवसाय का विस्तार किया और आठ कट्ठा जमीन खरीदकर अपनी नर्सरी का संचालन करने लगी। उनकी नर्सरी में मिर्च, गोभी, बैगन, टमाटर, कद्दू, करेला, खीरा और नेनुआ के बीज उपलब्ध हैं। नर्सरी से उन्हें सालाना 2,00,000–2,50,000 रुपये की आमदनी होती है। इसके अलावा, मशरूम उत्पादन और जीविका मित्र के रूप में उन्हें अतिरिक्त प्रतिमाह 10,000–15,000 रुपये की आय हो जाती है।

मुनिया दीदी ने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवाई है। आज उनका जीवन आर्थिक रूप से मजबूत और प्रेरणादायक है। उनकी कहानी यह साबित करती है कि दृढ़ संकल्प, मेहनत और सही अवसर से कोई भी महिला निर्धनता से ऊपर उठ कर आत्मनिर्भर बन सकती है।

जीविका के कौशल प्रशिक्षण से अर्पिता ने छूआ आसमान

बिहार के सीमावर्ती जिले किशनगंज के पोठिया प्रखंड अंतर्गत फाला पंचायत की रहने वाली अर्पिता सिन्हा आज उन ग्रामीण बेटियों के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं, जो सीमित संसाधनों के बावजूद बड़े सपने देखने का साहस रखती हैं। अर्पिता वर्तमान में इंडिगो एयरलाइन में विमान परिचारक (ग्राउंड क्रू) के रूप में कार्यरत हैं और उनकी पोस्टिंग चेन्नई एयरपोर्ट पर है। यह उपलब्धि केवल अर्पिता की मेहनत का परिणाम नहीं है, बल्कि जीविका सामुदायिक संस्थाओं और दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के समन्वित प्रयासों का सशक्त उदाहरण भी है।

अर्पिता बचपन से ही पढ़–लिखकर नौकरी करने और आत्मनिर्भर बनने का सपना देखती थीं। वह चाहती थीं कि उनका अपना एक नाम हो, एक पहचान हो। हालांकि, उनके परिवार की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह तकनीकी या एविएशन क्षेत्र की पढ़ाई का खर्च उठा सकें। अर्पिता की माँ लक्की सिन्हा, गायत्री जीविका स्वयं सहायता समूह की सदस्य हैं और जीविका की बैठकों में नियमित रूप से भाग लेती हैं। इसी जुड़ाव ने अर्पिता के जीवन की दिशा बदल दी।

लक्की सिन्हा बताती हैं कि संस्कार जीविका महिला संकुल संघ की एक बैठक में उन्हें दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना के अंतर्गत संचालित इंफोवेली एजुकेशन एंड रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड परियोजना क्रियान्वयन एजेंसी के बारे में जानकारी मिली। इस संस्था द्वारा विमान परिचारक (ग्राउंड क्रू) का नि:शुल्क आवासीय प्रशिक्षण और रोजगार का अवसर उपलब्ध कराया जा रहा था। यह जानकारी उनके लिए उम्मीद की नई किरण बनकर आई, क्योंकि अर्पिता पहले से ही विमानन (एविएशन) क्षेत्र में जाने की इच्छा रखती थीं।

आवेदन और साक्षात्कार की प्रक्रिया के बाद अर्पिता का चयन इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए हो गया। इसके बाद उन्होंने कुल नौ महीने का प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिसमें छह महीने का पूर्ण आवासीय प्रशिक्षण और तीन महीने का व्यावहारिक प्रशिक्षण (ऑन–द–जॉब) प्रशिक्षण शामिल था। इस दौरान उन्हें न केवल तकनीकी और पेशेवर कौशल सिखाया गया, बल्कि अनुशासन, संवाद कौशल, आत्मविश्वास और कार्य संस्कृति की भी गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद अर्पिता का चयन इंडिगो एयरलाइन में विमान परिचारक (ग्राउंड क्रू) के पद पर हुआ और उनकी पोस्टिंग चेन्नई एयरपोर्ट पर की गई। वर्तमान में वह लगभग 30 हजार रुपये मासिक वेतन प्राप्त कर रही हैं। यह उपलब्धि एक साधारण ग्रामीण परिवार के लिए असाधारण है।

अपनी बेटी की सफलता के बारे में बताते हुए लक्की सिन्हा भावुक हो जाती हैं। वह कहती हैं कि बिहार के सुदूर क्षेत्र किशनगंज जिले की फाला पंचायत की बेटी आज देश के बड़े महानगर चेन्नई में नौकरी कर रही है, यह सोचकर ही गर्व होता है। नि:शुल्क आवासीय प्रशिक्षण के कारण ही उनकी बेटी पढ़ाई पूरी कर पाई और नौकरी हासिल कर सकी। यदि जीविका और दीन दयाल कौशल्य योजना का सहयोग नहीं मिलता, तो विमानन (एविएशन) जैसे क्षेत्र की पढ़ाई उनके लिए असंभव थी।

अर्पिता के आत्मनिर्भर बनने से पूरे परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आया है। परिवार का आत्मविश्वास बढ़ा है और भविष्य को लेकर एक नई आशा जगी है। अर्पिता आज न केवल अपने परिवार का सहारा बनी हैं, बल्कि अपने गाँव और पंचायत की अन्य बेटियों के लिए भी यह संदेश दे रही हैं कि सही मार्गदर्शन, अवसर और मेहनत से कोई भी सपना पूरा किया जा सकता है।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार